नुष्य बनो

वा०मू०
६-००

ा अति

शुभ संकल्प,

प्रेम,

र्म,

ब्रह्मचर्य पालन,

फकीरचन्दजी महाराज

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक
कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, स
सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है।
बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और स
रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी
दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पा
होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ
लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी
पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अ
डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अग
निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दू
बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि
के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता सा
लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २९ | बैशाख सं० २०३६ वि० अप्रैल, १९७९ | संख्या ७

पीर हरो अब आये

हर्षकुमार द्वारा श्री जगदीश्वर सहाय, पो० गुरुकुल महाविद्यालय,
जिला सहारनपुर-२४९४०५

साँझ सबेरे गाऊँ मैं गुण तेरे,
पीर हरो अब आये ।
मैं निर्धन तुम मेरे स्वामी, सुधि लो अब तो अन्तर्यामी ।
दरश दिखादो दर्द मिटादो, प्राण रहे अकुलाये ॥ पीर हरो०
सब कुछ तेरा क्या है मेरा, दुनियाँ रैन बसेरा ।
तेरी कृपा विन व्यर्थ है जीवन, जग सारा दुख पाये ॥ पीर हरो
तू है मुझमें, मैं हूँ तुझ में, क्या रखा है झूठे जग में ।
जब तू मेरे मन में समाये, दुख को मिटाये मन मेरा हर्षाये ।
पीर हरो अब आये ।
जीवन का मैं सब सुख पाऊँ, जिस पल तेरा दर्शन पाऊँ ।
नाम ही तेरा एक सहारा, नय्या पार लगाये ॥ पीर हरो अब०

—❋—

सत्संग

हजूर परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर, २०-१-७८

बंझा ने बालक जाया, जिन सकल जीव भरमाया।
अज्ञानी नाम कहाया, जिन माया सबल उपाया।
ब्रह्मा और विष्णु महेशा, नारद और सारद शेषा।
ऋषि मुनि और जोगी ज्ञानी, सबको उन ले धर खाया।
वेद पुरान शास्त्र परमाना, दे दे जीवन अधिक भुलाया।
जीव का अजान मर्म नहीं जाने, काल दुष्ट जंजाल लगाया।
रहट चड़ी सम ऊँचे नीचे, भरमत फिरे कुछ चैन न पाया।
कोई ज्ञान कर ब्रह्म समाने, कोई उपास बैराट में समाया।
कोई करमी स्वर्गन में पहुंचे, कोई विषई नर्कन भोगाया।
मुक्ति पदारथ बढ़कर जाना, ज्ञानी ऐसा धोखा खाया।
कोई काल मुक्तो रस भोगा, फिर नर देही आन बंधाया।
कर्म करे जैसे देही में, फिर तैसा फल पाया।
करमी विषई और उपासक, इन तो सदही चक्कर खाया।
काल जाल से कोई न बाचा, निज घर अपने कोई न आया।
तब सतपुरुष दया चित आई, कलि में संत रूप धर आया।
सब जीवन को दिया संदेसा, सतलोक का भेद जनाया।
बिरले जीव बचन उर माना, उनको ले सतपुर पहुंचाया।
बहुतक जीव बँधे श्रुति स्मृत, संत वचन परतीत न लाया।
फिर फिर माँगे वेद प्रमाना, उन उस घर को नेति सुनाया।
जब नहीं वेद वेद का करता, तब का भेद संत गुहराया।
उस घर का मर्म वेद नहिं जाने, फिर क्यों कर परमान सुनाया।
यह तो बात अगम गति न्यारी, सन्त बिना कोई नेक न गाया।
ताते सन्त वचन को मानो, यह परतीत प्रमान दृढ़ाया।

सन्त बिना कोई मर्म न जाने, वेद कतेब कहां से लाया।
वह तो तीन गुनन में बरते काल वचन कानून सुनाया।

॥ दोहा ॥

वेद वचन त्रिगुन विषय, तीन लोक की नीत।
चौथे पद के हाल को, वह क्या जाने मीत।

राधास्वामी,

मुझे छोटी आयु से ही कोई तलाश थी जो सब में होती है। प्रत्येक व्यक्ति अन्तर कुछ न कुछ अवश्य चाहता है। कोई धन, कोई मान, कोई कुछ मगर मुझे तो केवल उस मालिक के मिलने की इच्छा थी। वह मालिक क्या निकला? शान्ति। यही इच्छा और यही तड़प मुझे महर्षि दातादयाल के पवित्र चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे सन्त मत का रास्ता दिखाया और राधास्वामी मत की बाणियां पढ़ने को कहा जिनमें से एक वाणी यह भी है। जोकि अभी पढ़ी गई। अब इस बाणी को सुनकर कौन हिन्दू सहन करेगा। लेकिन इस बाणी में जो कुछ कहा गया है बिल्कुल ठीक है।

ब्रह्मा और विष्णु महेशा,
नारद और सारद शेषा।
ऋषि मुनन और जोगी ज्ञानी,
सबको उन ले धर खाया।

अब ऐसी बाणी पढ़कर मन का बेचैन होना साधारण सी बात थी। मगर अब मैं अपने आपसे पूछता हूं कि ए फकीरचन्द! तेरा जाती तजुर्वा क्या कहता है? कि क्या यह वाणी बिल्कुल ठीक है? मैं सन्त मत का पक्ष नहीं लेता। मैंने राधास्वामी मत से क्या लेना है? कुछ नहीं।

मैंने तो प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा और अब मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ अपने जाती अनुभव पर कह रहा हूं। गलत या सही हो कुछ भी हो मैं अपना जाती अनुभव कह रहा हूँ।

सही है तो मुझे खुशी नहीं, गलत है तो मुझे गम नहीं।

बंझा ने बालक जाया।
जिन सकल जीव भरमाया ।।

असल मतलब तो स्वामी जी जानते होंगे। जिन्होंने बाणी लिखी है। मैंने जो कुछ समझा है अपने जाती अनुभव पर कह रहा हूँ। बंझा वह औरत है जो बच्चा पैदा नहीं कर सकती। यह है आदि शक्ति। या साइंस की जवान में (Cosmic Rays) कहते हैं। गुरु नानक देव जी भी इस आदि शक्ति के विषय में कहते हैं।

एको माई जगत ब्याई, तिन चेले परवान।
एक संसारी एक भंडारी एक लाये दिवान ।।

इसी को यहाँ बंझा या माया कहा गया है। यह वह शक्ति है जो कि हमारे अन्दर मन को पैदा करके और स्थापित करके उसके द्वारा हमारे अन्दर कई प्रकार के विचार पैदा करती है। दूसरे अर्थों में इसे वासना भी कहते हैं। हमारा मन जो है वह इस माया या बंझा का बालक है। इसकी एक aspect को Sub-consious mind भी कहते हैं।

ऐसे ही Cosmic Rays जो कि दृष्टि गोचर नहीं होती मगर फिर भी उनमें एक विशेष शक्ति है जो कि Electrons और Protons और न्यूट्रान्स को बनाती है और फिर आगे चलकर इन्हीं द्वारा Gross Matter स्थूल प्रकृति को बनाती हैं। साइन्स भी इस आदि शक्ति की Energy कह कर मानती है।

बंझा ने बालक जाया।
जाने सकल जगत भरमाया ।।

यह बालक मन है जो आदि शक्ति के द्वारा पैदा हुआ और इस मन ने सारी त्रिलोकी को नाच नचा रखा है इस मन को कोई अपना निजी ज्ञान नहीं है। इसलिए जब तक वह है सभी को नाच नचाता रहेगा।

ज्ञानी नाम कहाया, जनमाया सबल उपाया ।

बलवान माया आदि शक्ति ने इस अज्ञानी मन को पैदा किया। यह अज्ञानी मन कई प्रकार की रचना रच लेता है। क्या बहुत से लोगों का अज्ञानी मन मेरे रूप को अपने अन्दर प्रकट नहीं कर लेता ? यहां पर प्रोफेसर भक्तराम बैठे हैं। उनके अन्दर भी मेरा रूप इनके अज्ञानी मन द्वारा प्रकट होता है। मेरा रूप स्थूल रूप बनकर विद्यार्थियों के पर्चे भी हल करा देता है। और बहुत से लोगों के और भी कई काम कर देता है। अज्ञानी मन के अन्दर जो जज्वा पैदा होता है। वह इस जज्वे से कई प्रकार की रचना कर लेता है। और उसके पीछे दौड़ता है। कभी कोई राम बना लेता है कभी कोई कृष्ण कभी कोई बाबा फकीर बनाकर पूज लेता है ये सब अज्ञानी मन को ही अपनी रचना है। यह मन जो कि स्वमेव सूक्ष्म आद शक्ति से पैदा हुआ होता है। मगर यह अपने अज्ञानी मन के कारण स्थूल मादा के बने पदार्थ भी पैदा कर लेता है। ऐसे ही हम लोग जो कि अज्ञानी हैं अपने अज्ञान के कारण ही किसी से दुश्मनी और किसी से घृणा पैदा कर लेते हैं। हम अगर अपने अन्तर प्रबल विचार पैदा करके किसी का बुरा सोचना शुरू कर दें तो उसका बुरा हो जाएगा। ऐसे ही अपनी मनोशक्ति से किसी का बुरा चाहेंगे तो उसका बुरा होगा। आपस में अगर हम घृणा करें तो हम दोनों को हानि होनी अनिवार्य है। ऐसे ही अगर हम किसी का भला चाहेंगे तो उसका भला होगा। अगर हम यह चाहते हैं कि यह वज्ञा का बालक मन अपनी ही एक सबल दुनिया न बना लेवे तो फिर हम को सन्तों की शरण में जाना चाहिए। और अपनी सुरत को शब्द प्रकाश की तरफ ले जाना चाहिए और अगर हम दुनियादारी की इच्छायें अपने अन्दर रखते हैं तो हमारे लिए यह जरूरी है कि हम इस मन को अच्छे विचार दें। इसकी जो शक्ति है उसका सही प्रयोग करके लाभ उठायें। इस अज्ञानी मन में कितनी शक्ति है यह इस बात से स्पष्ट हो जाता है

कि कई विद्यार्थी मुझे आकर बताते हैं कि मैं उनके परीक्षा के कमरे में प्रकट हुआ और उनके पर्चे हल करवा गया। असलियत यह है कि न मैं वहां स्वयं गया न ही मुझे जाती तौर पर कुछ ज्ञान है। एक और भक्त ने आकर मुझे कहा बाबा ! पहाड़ी पर कुछ लड़के खेल रहे थे उनके हाथों एक पाँच छः मन का पत्थर मेरी टाँग पर आ पड़ा, मेरी टाँग टूट गई। दो लड़के और भी आए मगर उनसे उनसे पत्थर नहीं उठाया गया बाबा ! क्या आपको याद है कि आप आए और आपने वह पत्थर उठाकर एक तरफ फेंक दिया ? अब असलियत यह है कि मैं तो वहाँ गया नहीं न ही मुझे जाती तौर पर इस बारे किसी प्रकार का ज्ञान है। इससे क्या साबत हुआ कि ये सब उनके अज्ञानी मन को करामात थी।

बंझा ने बालक जाया।
जिन सकल जीव भरमाया ॥
अज्ञानी नाम कहाया।
जिन माया सबल उपाया ॥

तभी तो कहते हैं ज्ञानी के कर्म नही होते। जिसको ज्ञान हो जाता है वह कुछ सोचता विचारता है। उससे सबल माया या बलवान स्थूल प्रकृति नहीं बनती। मगर उसने पहले वक्त अपने अज्ञानी अवस्था में जो सबल गाया बनाती थी उसका परिणाम तो जरूरी भोगना पड़ेगा। उसके अच्छे या बुरे कर्म से बच के कहीं नहीं जा सकता। अब यदि वह सचमुच ही ज्ञानी बन गया है और बात उसकी समझ में आ गई है तो अब उसके अन्दर जो विचार पैदा होंगे वो सबल माया का रूप धारण करेंगे। इसलिए कहते हैं कि ज्ञानी के प्रालःध कर्म नहीं होते। दुनिया यह समझती है जो ज्ञानी हो गया उसके पिछले प्रालब्ध कर्म कट भी जाते है यह बिल्कुल गलत बात है। हाँ यह बात जरूर है कि अब जो कर्म वह करेगा उसके प्रभाव से वह बचा रहेगा। उसके उन ख्यालात के कर्म नहीं

बनेंगे। क्योंकि अब उसको ज्ञान है। अपने ज्ञान से वह अपने मन को वश में हो रखता है। और अज्ञान के कारण उस मन के द्वारा सबल माया नहीं पैदा होने देता।

ब्रह्मा और विष्णु महेशा।
नारद और सारद शेषा॥
ऋषि मुनि और योगी ज्ञानी।
सबको उनको धर खाया॥

यह मन ऐसा प्रबल और चंचल है कि इसने अपनी गति विधि से सबको दुखी किया। इस सीमा तक कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नारद, सारद। और शेष, ऋषि मुनी और योगी, ज्ञानो सत्री इसकी लपेट और पकड़ में आकर कभी न कभी धोखा खा गये।

लोग कहते हैं कि अमुक मनुष्य को देवी प्रकट हो गई। बाहर से देवी कहां से आ गई? मैं यहाँ होशियारपुर में बैठा हुआ होता हूँ और मेरा रूप दूर दूर में जाकर प्रकट होकर लोगों की कठिनाइयों को हल कर देता है। जब मैंने यह बात बार बार बहुत से लोगों से सुनी तो मेरी आंखें खुल गई मुझ पर असलियत प्रकट हो गई और मैंने जो असलीयत प्रकट हुई थी खुले आम कह दी।

मगर बड़ी मुसीबत इस बात की है कि भिन्न २ मजहबों और पंथों वाले गुरुओं ने आप लोगों को मूर्ख बना कर उनका खून पिया और उनको लूटा। मेरा मन्तव्य मतमतान्तरों के संचालकों से नहीं बल्कि आजकल के चर्म के ठेकेदारों ने जो गुरु बनकर अपनी २ दुकान चला रहे हैं। वह अपनी असलीयत को छुपाकर ऐसी बातों द्वारा अपना प्रचार करके आम को लूटते हैं। वास्तविकता यह है कि जो भी कोई किसी का रूप का ध्यान करता है वही रूप उसके सामने प्रकट हो जाता है यह उसके मन की अज्ञान अवस्था के कारण ही है जो कि सबल माया को पैदा करती है। जब इस मन में इतनी ताकत है तो क्यों न उससे परम उत्तम काम लेकर लाभ उठाया जाए।

हमारे लिए यह ठीक है कि हमेशा इस मन की नेक और ठीक रास्ते पर लगाए रखें। हमारी हर कोशिश यही होनी चाहिए कि हमारा मन हमेशा 'शिव संकल्प वाला हो' क्योंकि हम आमतौर पर ऐसा नहीं करते इसलिए मन गलत बातों में लगा रहता है। परिणाम यह है कि भाई भाई में, कोम कोम में और नसल नसल में द्वेषभाव पैदा हो गया है। सारा संसार कई भागों में बँट गया है। लोग एक दूसरे की बुराई करते हैं और सिर काटने के लिए तैयार रहते हैं। मैं नहीं कह सकता कि सन्तों ने किस ख्याल को दृष्टि में रखते हुए अपनी इस शिक्षा को आरम्भ किया। और स्वामी जी ने किस विचार से इस ताली को फैलाया है। मगर जाती तौर पर मैंने जो रहस्य खोजा है वह सभी पर खोल रहा हूं। मेरा यह कहना है कि बंभा का बालक आद शक्ति मूल प्रकृति का बना हुआ मन प्रत्येक से चिपटा हुआ है। तुम जैसी दुनियाँ चाहते हो उसके द्वारा पैदा कर लो। अच्छी चाहते हो तो अपने मन को अच्छे काम में लगाओ। उस मन को 'शिव संकल्प' में लगाए रखना वेद मार्ग है। मैंने इस रहस्य को इसलिये खोला है कि हमारा जो धार्मिक पक्षपात है वह दूर हो जाए। जरा देखो तो सही और तो और राधास्वामी मत के ही अब तक कितने डेरे बन गये हैं। एक डेरे वाले की दूसरे डेरे वाले के साथ नहीं बनती। हिन्दुओं से मुसलवान अलग हो गये, यहूदियों से ईसाई अलग हो गये। हिन्दुओं से सिक्ख अलग हुए, सनातन धर्मियों से आर्य समाजी अलग हो गए ये सब कुछ किस कारण हुआ बंभा के बालक मन के अज्ञान होने के कारण। मुझे ठीक पता है कि यह बालक तो मुझे भी घेरे हुए है। जब तक मैं इस शरीर में हूँ यह कब मुझे छोड़ने का है। जब तक तुम देहधारी प्राणी हो यह बंभा का बालक तो तुम्हारे साथ ही रहेगा। जाते कहाँ हो ? इससे बचना कठिन है बड़े से बड़े देवता और सन्त तक न बच सके। आप लोग इतना अवश्य कर सकते हैं इस मन को 'शिव संकल्प' में लगाए

रखो। उनको अच्छे ख्यालात दो, अपनी उन्नति चाहो, संसार की अच्छी वस्तुओं की इच्छा करो यह ठीक है। किन्तु तुम अपने अज्ञान के कारण दूसरों का बुरा चाहोगे ता तुम दोनों का बुरा होगा। अगर ज्ञान के कारण सभी का भला चाहोगे तो आप सभी का भला होगा। 'सर्वस्व का भला' माँगा करो और अपने मन के जिम्मे इसी को लगाओ कि ये 'शिव संकल्प' में लगा रहे और सभी का कल्याण माँगे।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। मैंने जो कुछ भी समझा कह दिया। सभी को बता दिया। साफ तौर पर खोलकर सामने रख दिया। मैंने साफ देख लिया है कि इस वंझा के बालक के पकड़ से कोई नहीं बचा। दातादयाल ने धाम बनाई इसी कारण सन्तों ने अपने २ डेरे बनाये केवल इसी के चक्कर में आकर राधास्वामी साहिब ने पन्थ चलाया। इसी मन के घेराव में आकर जब तक जीवित हो असली बात को समझो और यदि इस दुनिया को हमेशा के लिए छोड़ना चाहते हो और आवागमन के चक्कर से बच निकलना चाहते हो तो इस मन से आजाद होने के लिए उपाय करना पड़ेगा। मैं भी प्रयत्न करता रहता हूँ कि मन को छोड़ दूँ मगर यह बड़ा जालम है। कई बार ऐसी मार मारता है जिसकी कोई सीमा नहीं रहती।

वेद पुरान शास्त्र परमाना।
दे दे जीवन अधिक भुलाया।।

जब मैं अपना अनुभव कहने लगता हूँ तो मेरे अन्दर से आवाज आती है कि फकीरचन्द ! कोढ़ी होकर मरोगे यदि जान बूझकर झूँठ बोलोगे या किसी प्रकार का पक्षपात करोगे। मेरी अन्तरात्मा इस बात को मानती हैं कि मैं स्वयं भूला हुआ था। मुझे पता नहीं था। स्वामी जी प्रमाण देते हैं। बड़े बड़े ऋषि मुनि तक प्रमाण देते हैं। मगर अपना जाती अनुभव बताने सभी कतराते हैं। सभी यही कहते

हैं कि वेद यह कहता है पुराण यह कहता है, शास्त्र यह कहता है, गीता यह कहती है, अंजील यह कहती है, कुरान यह कहता है गुरु नानक देव जी यह कह गये। मगर मैं यह कहता हूँ कि उनके बाद आने वाले साधक और सन्त अपना २ जाती अनुभव पूरी सच्चाई व्यान करने से परहेज करते हैं। गुरु नानक देव जी और दीगर पैगम्बराने वक्त अपने २ हालात में दुनिया के भले के लिये जो कह गए वे ठीक कह गए। मगर आज के गुरु के पीर जो हैं वे तो बड़े-बड़ों के प्रमाण देकर अपनी २ दुकान चला रहे हैं अपना २ जाती अनुभव अमलीय सच्चाई ब्यान करने से बचते हैं।

जीव अजान मम नहीं जाने।
काल दुष्ट जंजाल लगाया॥

कहा है कि जीव तो बेचारा अंजान है उसको समझ नहीं है, और न ही उसको भेद का पता है। दुष्ट काल ने जंजाल लगाया हुआ काल नाम परमात्मा का भी है इसमें सन्तों ने इशारे से परमात्मा को भी कोसा है। मैं तो डके की चोट से कहता हूँ कि हमारे मन पर जिस प्रकार का संस्कार है जो कुछ उसने माना हुआ है उसी के अनुसार ही उसका कर्ष है। जैसी उसकी गति वैसी उसकी गति, जैसी उसकी करणी वैसी उसकी भरनी, जैसा उसका ख्याल है वैसा ही उसका हाल है। यह बात भले ही मुश्कल जान पड़े मगर यह है सच्ची। अगर मैंने इस सच्चाई को न समझा हुआ होता तो वेशक मैं नरक में जाता। मगर मैं राधास्वामी मत, कबीर मत और सन्त मार्ग के विपरीत वह आवाज दे जाता कि लोग याद रखते। अब भी जहाँ मैं सन्त लोगों की गलतियाँ देखता हूं। ऐलान करके आवाज देता हूं मैं डरता नहीं यह जीवन चार दिन का है जिसकी इच्छा हो मेरा खण्डन करे। मैं कोई परवाह नहीं करता मगर सच्ची बात कहने से नहीं डरता।

सन्तों की तालीम दुनियादारों के लिए नहीं है यह केवल उन

लोगों के लिए है जो कि आवागवन से छुटकारा पाना चाहते है आम लोगों के लिए तो बस इतना कहना काफी है कि बंझा के बालक को — अपने इस मन को अच्छे ख्याल दो। इसे "शिव सकल्प में लगाये रखो। ताकि वह जो सबल माया रचता है वह अच्छी प्रकार की रचे। मन में बड़ी भारी शक्ति है यह इससे साबत होता है कि यद्यपि मैं कहीं जाता फिर भी लोग अपने मन की शक्ति द्वारा मेरा रूप प्रकट करके उससे दवाई पूछकर रोग मुक्त हो जाते हैं। और मैं हूँ कि स्वयं बीमार हो जाता हूं तो डाक्टरों के पास जाकर दवाई लेता हूं।

एक भक्त मेरे पास आया और कहने लगा बाबा जी ! क्या आप डाक्टरों से दवाई लेकर खाते हैं ? मैंने कहा हाँ। उसने कहा, हम तो जब बीमार पड़ते हैं या घर में कोई बीमार पड़ जाए तो किसी डाक्टर के पास नहीं जाते केवल आपको याद करते हैं। आप बता जाते हैं हम बाजार से ले आते हैं और राजी हो जाते हैं। मगर सच्चाई यह है कि मैं आप कई बार बीमार पड़ जाता है और डाक्टरों के पास जाता हूँ। यह जो बंझा का बालक है इसमें बड़ी शक्ति है आप लोग इसको सदा विश्वास दो और अच्छाई की ओर ले जाओ। तुम्हारी दुनिया बन जाएगी। यदि इसको बुराई की ओर ले जाओगे तो तुम्हारी दुनियाँ बिगड़ जाएगी। लोग कहते हैं बाबा आकर दवाई बता जाते हैं मैं तो जाता नहीं फिर दवाई कौन बताता है। वही बंझा का बालक उनका मन। यह सारा का सारा खेल तुम्हारे मन का ही है। अगर कोई लोग जन्म मरण के चक्कर से बचकर मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो उनको मन से आगे जाना पड़ता है। यह मार्ग केवल सन्तों का है। शेष संसार के लिए तो वेद मार्ग है। वह यह है कि अपने मन को 'शिव संकल्प' में लगाये रखो। अच्छे और ठीक ख्याल रखो। मगर इतना ध्यान अवश्य रखो कि जो भी कोई काम लेना है अपने मन से ही लेना है। अपने मन

से जो चाहे बना लेता है। राम, कृष्ण, नानक, अल्हा, ईसा, जब ये सब कुछ मन ही का चमत्कार है तो फिर आपस में बैर विरोध, लड़ाई झगड़ा रखने से क्या लाभ। अपने २ मन से अपना २ काम लेते रहो। साथ वालों से किस लिए झगड़ा करते हो।

रहत घड़ी सम ऊँचे नीचे।
भरमत फिरे कुछ चैन न पाया।।

सन्त मार्ग तो शान्ति का मार्ग है। हमारा मन ही है जो हमको प्रातः कुछ दोपहर को कुछ सायं को कुछ और सोचता ही रहता है। जब उसकी शक्ति अधिक हो जाती है तो कई रूप धारण करके उसके सामने आ जाता है यह मन हमको ऊपर नीचे आकाश पाताल कई जगह घुमाता फिरता रहता है और कभी चैन नहीं लेने देता।

कोई ज्ञान कर ब्रह्म समाने।
कोई उपास बैराट में समाया।।

किसी साधक ने तो ज्ञान का मार्ग अपना लिया और ब्रह्म में समा गये। कोई २ उपासक ऐसा भी था जो बिराट पुरुष में समा गया। जो लोग प्रकाश में जाकर लीन हो जाते हैं वे सदा हो वहाँ नहीं रहते उनको भी फिर कभी न कभी जन्म ग्रहण करना पड़ता है प्रकाश के बारे मेरा निज अनुभव है। बसरे बगदाद में जब मैं नौकरी पर था तो मैंने बहुत प्रकाश देखा अपने ऊपर रजाई ली हुई होती थी मगर रजाई में से भी छत की कड़ियाँ नजर आती थी। क्या उस प्रकाश की अवस्था को प्राप्त करके मैं सर्व कलेश रहित हो गया सर्व कामना रहित हो गया, क्रोध रहित हो गया, लोभ रहित हो गया ? नहीं। मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह सबको प्राप्त हुआ। प्रकाश प्राप्त होने के बाद भी। तो इससे सिद्ध हुआ कि केवल प्रकाश ही अन्तिम अवस्था नहीं है।

जरा सोचो तो, राम ब्रह्म के अवतार थे पुराणों में लिखा है कि जब राम ने अवतार लिया तो उनका काम करने वाले सभी धरती

पर आए कोई हनुमान बनकर आया, कोई सुग्रीव बनकर आया। कृष्ण अवतार के समय कोई गोपियां गोप बन कर आए। पुराण गलत बात नहीं कहते, पुराण सच्चाई की शिक्षा देते हैं, पुराण पढ़ने से सिद्ध होता है कि प्रकाश में लय होने वाले को भी पुनर्जन्म ग्रहण करना होता है।

कोई करमी स्वर्ग में पहुंचे।
कोई विषई नर्क न भोगाया ।।

कहा है कि हमारा मन जो ब्रंभा का बालक था किसी को प्रकाश में ले गया। किसी को नर्क में ले गया, किसी को स्वर्ग में ले गया। जैसे कर्म उस द्वारा हमने कराये वैसी २ गती का हम प्राप्त हुए।

मुक्ति पदारथ बढ़कर जाना।
ज्ञानी ऐसा धोखा खाया ।।

यहाँ पर स्वामी जी कहते हैं कि ज्ञानी लोग मुक्ति की तलाश में गए तो उन्होंने भी धोखा खाया। अब बताओ मैं अपने आप से पूछना चाहता हूँ फकीरचन्द ! क्या यह ठीक लिखा हुआ है कि ज्ञानियों ने भी धोखा खाया। अब सोचने की बात यह है कि मुक्ति क्या वस्तु है किसी प्रकार की मुक्ति की तलाश में ज्ञानी लोग भी धोखा खा गए। मुक्ति अर्थ है मोक्ष का, मोक्ष खुलने को कहते है। हमको हमारे मन ने अगर किसी ख्याल में बँधा हुआ है तो हम बंधन में हैं। जब तक हमारा किसी से लगाव है तो हम बंधन में हैं। जिस लगाव से हमें दुख होता है उस दुख से छुटकारा प्राप्त कर लेना मुक्ति है।

अब देखो ये बाणियाँ ! इनको ध्यान से पढ़ो। मैंने इनको समझाने में अपनी सारी आयु खो दी मगर मैं अब भी दावा नहीं कर सकता मैं जो कुछ कहता हूं यह ठीक है।

मुझे तो केवल इस एक ख्याल ने सन्त मत को सच्चा सिद्ध किया कि मैं किसी के अंतर नहीं जाता और लोगों को मेरा दर्शन होता है। इसी बात को पर्दे में रखकर वर्तमान सन्तों ने और गुरुओं ने दुनिया

को मूर्ख बना रखा है और जी भरकर लूटा है। मगर मैं इस बात में सन्तों का दोष नहीं गिनता वे विवश थे क्योंकि तुम लोगों को सत्यता की आवश्यकता नहीं। मेरे पास कितने आदमी आते हैं जो यही रंडी रोना रोते हैं। संतान नहीं, धन नहीं पुत्र दुखी करता है, कोई लड़की की शादी की चिन्ता कर रहा है। सन्तमत की शिक्षा और उपदेश को कौन सुनता है या कौन सुनने को आता है। मैं गलती करता हूं जो इन सन्तों को बुरा भला कहता हूं। दुनिया सन्त मत की अधिकारी नहीं है बस यही बात है।

सन्तमत तो केवल उनके लिए है—

विषयों से जो होय उदासा।
परमारथ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जापे,
खोजत फिरे साध गुरु जागे।

दुर्गादास ! तू मेरे पास आता है। क्षमा करना ! जब तक शादी नहीं हुई थी क्या सन्तमत के लिए आता था आज विवाह नहीं हुआ, आज यह नहीं हुआ इसी झगड़े में थे। सन्तमत को समझो ! तुम्हारे लिए अब समय आया है। मैं चाहता हूं मेरी बात को समझो दुर्गादास ! तुम्हारा फिर जन्म न हो यही मेरी इच्छा है इसलिए मैंने यह सतसंग आपको सुनाया।

कोई काल मुक्ति रस भोगा।
फिर नर देही आन बँधाया॥

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं सम्भव है कि आप मेरी बात को न समझें कि मैं सोचता हूँ फकीरचन्द ! मुक्ति से परे भी कोई अवस्था है ? यह बहुत सूक्ष्म बात है। जब तक तुम्हारा 'हंपना' तुम्हारा 'मैं पना' तुम्हारा 'सुरत पना' तुम्हारा 'आत्मपना' तुम में विद्यमान है। तब तक तुम किसी न किसी जगह ठहरोगे। जब तक तुम किसी जगह रुकोगे तो वहाँ से आना जाना होता रहेगा। मैंने

सन्त मत को क्या समझा, चेतन का बुलबुला जब टूटा तो पानी में मिल गया अर्थात उसकी देहिक 'मैं' चली जाए मानसिक 'मैं' भी चली जाए। यह बहुत ऊँची बात है। जीव की अन्तिम अवस्था भी यही है। मैं आप महसूस करता हूं कि मेरे पास शब्द नहीं हैं जो इस बात को पूरी तरह स्पष्ट कर सके ताकि पूरी तरह किसी की समझ में में आ जाए। मेरी आत्मिक 'मैं' या सुरत की 'मैं' अभी तक नहीं गई। मगर मैं उसके रूप को पूरी तरह से जान गया हूँ और वह भी क्या निकला। जब यह बात पूरी तरह समझ में आ गई कि मैं तो जाता नहीं मगर आप लोग कहते हैं कि मैं आपके अन्दर प्रकट हुआ।

मेरे अंदर यह प्रकाश और शब्द है। जब व्यक्ति प्रकाश में रहता हुआ मर जाता है वह प्रकाश देश से मृत्यु लोक में फिर वापिस आता हैं। जो शब्द को सुनता हुआ मरेगा वह सतलोक में रहेगा। जब मैं वस्तु की तलाश करता हूँ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है वह क्या है। जब उसकी ओर मेरी तबजह जाती है तो न प्रकाश है न शब्द है और न 'मैं' है। अगर इस अवस्था में मैं अपना शरीर छोड़ दूँ तो फिर मुझे कौन जन्म देगा। जब मैं ही न रहा तो जन्म कौन लेगा। जब अस्तित्व ही न रहा तो फिर उसके बाद जन्म मरण कैसा और किसका।

संतों का मार्ग बहुत ऊँचा है यह सर्व साधारण के लिये नहीं है केबल उन लोगों के लिये है जो कि जन्म मरन के चक्कर से सदा के लिए छुटकारा चाहते हैं मगर ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं।

मैं कहता हूँ कि मैं अनामी धाम से आया हूँ। मैं जहाँ से आया हूँ उस देश की तलाश है। मछली पानी में ही उत्पन्न होती है पानी ही पानी करती है। पानी से अलग कर दो तो मर जाती है। जो खाता है वह भी पानी ही पानो करता रहता रहता है। आए तो हम सब वहाँ से ही हैं आपको पता नहीं मगर मुझे पता हैं।

अदम से जानबे हस्ती तलाशे यार में आये।

अदम का नाम ही अनामी है। वहाँ तो कोई २ जाता है सर्व साधारण के लिए इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं। मैंने क्योंकि प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा इसलिए कह रहा हूं।

कर्म करे जैसे देही में।
फिर तैसा फल पाया ॥

यह है शिक्षा जो मैं बदल रहा हूं। शिक्षा वही है जो स्वामी जी देते हैं। इस विश्वास पर मत रहो कि तुम बाबा फकीर के चेले हो। जो कर्म करते हो इनसे बच न सकोगे। चाहे किसी गुरु के चेले बन जाओ। बड़े से बड़े महापुरुष के चेले बन जाओ जो कर्म किए हैं वे नहीं जायेंगे। कर्म तत्व ही जायेंगे। जब तुम मन से ऊपर जाओगे। एक व्यक्ति ने मन के स्तर पर रहकर कितने ही कर्म किये हैं यदि मरते समय उसको प्रकाश या शब्द आ जाएगा तो समझो कि वह मन के मण्डल से निकल गया। एक अवस्था का नियम दूसरी अवस्था पर लागू नहीं होता। इसलिए समझो कि वह बच गए तभी तो कहते हैं कि—

नाम जो स्त्री एक है पाप स्त्री हजार।
आध स्त्री घट सींच रे जार करे सब छार ॥

हमने कितने भी पाप किए हैं अगर अन्त समय में आप प्रकाश में चले गये तो वह जो पापों का कर्म है वह हमको नियमानुसार लाग नहीं होना चाहिए। क्योंकि हम सबको मन से परे ले गए हैं। पाप पुण्य का दुख सुख तो मन मनाता है। कर्म द्वारा जो दुख सुख है वह तो मन महसूस करता है और कोई नहीं करता। तो जब तुम मन से ही निकल गए तो फिर पाप पुण्य का प्रश्न ही कहाँ रहा। पाप पुण्य और सुख दुख जो उनसे पैदा होते हैं उनका सम्बन्ध तो केवल मन के साथ ही है। जहां यह बंझा का बालक तुमसे अलग हुआ तो पाप पुण्य तो रहा ही नहीं। शर्त यह है कि अन्त समय

तुम्हारी यह अवस्था हो। इसी वास्ते हिन्दुओं में मरने वाले के लिए दस दिन तक दिया जलाकर उस स्थान पर रखते हैं जहाँ वह मरता है। जब उसका शव शमशान ले जाते हैं तो शंख और घड़याल बजा कर लोग मरने वाले को शब्द का संकेत करते हैं। दिया जलाकर प्रकाश का विचार देते हैं कि भाई तू तो प्रकाश स्वरूप है। यह है हमारा रहस्य। इसलिए बार बार कहा जाता है कि यदि ऊँची मंजल पर नहीं जा सकते तो इस जीवन काल में कम से कम प्रकाश तो प्रकट कर लो। ताकि जब तुम मरने लगो तो प्रकाश तुम्हारे सामने आ जाए। यदि अनुमानतः प्रकाश भी न आया तो जो अपने गुरू का रूप तुमने मन में बैठा रखा है यदि तुमने उस रूप को फकीरचन्द बल्द पं० मस्तराम का रूप माना हुआ है अथवा या किसी और देहधारी इन्सान का तो तुम पार नहीं जा सकते उस रूप को प्रकाश मानो।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

यदि किसी इन्सान का विश्वास ऐसा है तो यदि उसके सामने मरते समय गुरू का रूप भी आऐगा तो वह बंधन में नहीं आएगा। क्योंकि जिसको वह प्यार करता है उसको उसने इन्सान समझा ही नहीं भगवान ही समझा है। यही बात कबीर साहिब ने कही है।

गुरु को मानस जानते ते नर कहिए अन्ध।
दुखी होए संसार में आगे यम का फन्द॥

जो गुरु को धरती का इन्सान ही समझता है वह पार नहीं जा सकता। गुरु इष्ट है तुम लोग गुरु से प्यार करते हो इसलिए मैं तुम्हारी प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहता हूं। मैं स्वयं दुनिया के जाल में फँसकर तुमको फँसाना नहीं चाहता। जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है उसे मत समझो कि वह फकीर चन्द है पं० सन्तराम का लड़का है भूल जाओ उसको पूर्ण मानो मेरी अपनी कामयाबी का रहस्य यही है कि तुम जानते हो कि मैंने महर्षि जी को महर्षि नहीं समझा कभी सत्गुरु नहीं लिखा। जात मालिक

...है। यह है कुब्जा। तुम आये हो लोकचन्द तुम सोचो यह ठीक है तुम ठेकेदार बन गये हो लाखों करोड़ों में खेलते हो दुनिया का सुख देख लिया आखिर इस बात का ख्याल रखो कि तुमने यहां तो रहना नहीं न ठेकेदारी रहेगी न पत्नी रहेगी न बच्चे रहेंगे हंसा आप अकेला जायेगा। मैं ये बातें क्यों कहता हूँ यह मेरी ड्यूटी है। मैं तुमको अपने जाल में फँसाना नहीं चाहता यह महापाप है गुरू की जो ड्यूटी है मैं वह पूरी करना चाहता हूँ वह जो रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है उसको मत समझो कि वह फकीर चन्द है उसको पूर्ण मानो।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

अगर यह ख्याल रखोगे तो अन्त समय अगर यह रूप लेने आया तो तुम उसको होशियारपुर वाला फकीरचन्द नहीं मानोगे। तुम यही समझोगे कि परम तत्व आधार आया है। अगर शब्द नहीं भी खुला कुछ नहीं भी हुआ। फिर भी तुम्हारा बेड़ा पार है। मेरे पास दुनिया आती है मैं उनको Health weaith and Peace आशीर्वाद देता हूं। क्योंकि मैंने यह अच्छी प्रकार से समझ लिया है यदि सेहत ठीक नहीं है तो कुछ नहीं है यदि पैसा नहीं है तो जीवन किसी काम का नहीं है। इसलिए मैं इन दोनों को एक साथ ही कहता हूं। मैं यह सतसंग इसलिए करा रहा हूँ ताकि तुम सभी को अपना जन्म सुधारने का मौका मिले। हमेशा यह समझो कि गुरु तुम्हारे मस्तिष्क में रहता है। इस बात को भूल जाओ तुम्हारा गुरु होशियारपुर में रहता है। जब तक तुम गुरु को होशियारपुर निवासी समझते रहोगे तो तुम्हारा आवागमन नहीं छूटेगा तुम पार नहीं जा सकते। यह बताये देता हूँ तुमको मैं। मैं तो सच्ची २ बात कहता हूं यह ठीक है अगर मैं पर्दा रखता अपने रूप के प्रकट होने के बारे असलीयत स्वयं डंके की चोट से कहता बल्कि स्वयं चुप रहता और चेलों से कहलवाता परोपगंडा कराता। दुर्गादास ! आज मैं करोड़ों रुपये का मालिक होता। मगर मेरी अन्तर आत्मा यह आज्ञा नहीं देती मैं तुम्हारे लिए दुनिया और परमार्थ दोनों चाहता हूं। मैं तो

अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूँ। आग लगे गुरुवाई को। मैंने क्या लेना ? मैं तो गुरु का काम कर चला। गुरु नहीं बना मैंने वह कुछ भी नहीं किया जो कि गुरु लोग दुनिया को अपने पीछे लगाने को करते हैं। मैं तो तुम लोगों को केवल यही कहता हूँ कि अपना जन्म सफल करो।

करमी विषई और उपासक।
इन तो सदई चक्कर खाया ॥

कर्मी विषई और उपासक ये सब पार नहीं जा सकते। जन्म मरण दुख सुख, स्वर्ग, नर्क, सब कुछ भोगना पड़ेगा।

काल वाल से कोई न वाचा।
निज घर अपने कोई न आया ॥

मैं किसी पर कोई ऐसान नहीं करता। मैंने सोचा था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। सच्चा होकर इस रास्ते पर चलूँगा मैंने सारी आयु इसी खब्त में खो दी। मेरा बेड़ा तो तुम लोगों ने पार किया दातादयाल का ऐसान है वे समझाते थे मेरी समझ में न आता था पिछला समय गया मैंने तालीम को बदल दिया। दातादयाल तो इशारे से ही कहा करते थे अब मैंने पर्दा उठा दिया है।

तब सतपुरुष दया चित आई।
कलि में सन्त रूप धर आया ॥

मगर यह सब किन लोगों के लिये किया, उनके लिये जो इस जन्म मरण के चक्कर से बचना चाहते हैं। उनके लिये नहीं जो पुत्र चाहते हैं जो पोते चाहते हैं, इज्जत चाहते हैं उनके लिए सन्तमत नहीं हैं उनके लिए तो वेद मार्ग है कि जो कुछ चाहते हो उसकी इच्छा करो मिल जायगा। जो कुछ चाहते हो यहाँ ध्यान करो मिल जायगा। यह सब मन का चक्कर है सन्तमत आम जनता के लिए नहीं है।

सब जीवन को दिया संदेशा।
सत्तलोक का भेद जनाया ॥

साकार रूप जानकर मानते हैं तो जब वे मरेंगे तो जैसी आशा वैसी बासा। जिन लोगों ने मेरे रूप को जोकि उनके अन्तर प्रकट होता है। शब्द और प्रकाश का साकार रूप माना हुआ है वे तो बच जायेंगे। मैंने ठींक २ बात आप सभी से कह दी है आप सुनें या न सुने मैं इसकी परवाह नहीं करता। मैं तो यह चाहता हूं कि मेरे ऊपर गुरु बनने का कोई पाप न रहे और मैं किसी को धोखा न दूं।

यह सन्त मत तो उनके लिए है जो निर्वाण चाहते हैं, औरों के लिए वेद मार्ग है। अपने विचारों को ठीक रखो मन को 'शिव संकल्प' से भरा रखो। नेक बनो, हेरा फेरी और चार सौ बीस मत करो किसी को धोखा मत दो ताकि तुम्हारे जो जन्म हों उनमें तुम्हें कष्ट न हो। और यदि संसार से हमेशा के लिए बचना चाहते हो तो फिर सन्तों के मार्ग में आओ।

बिरले जीव बचन उर माना।
उनको ले सतपुर पहुँचाया।

किसी २ ने वचन को माना उस पर अमल किया और वे सतलोक चले गए। आप लोग यहां आये हो मैं तुमको सतलोक जाने का रास्ता बताता हूँ। यदि आप अधिक अभ्यास नहीं कर सकते तो न सही किन्तु मेरा वह रूप जो तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है शब्द और प्रकाश का साकार रूप मानो। यही समझो कि शब्द और प्रकाश उस रूप को धारण करके तुम्हारे अन्दर प्रकट हुआ। क्योंकि अन्त समय जब वही रूप तुमको लेने आएगा तो तुम यह नहीं समझोगे कि होशियारपुर से पं० मस्तराम का लड़का फकीरचंद तुमको लेने आया। तुम यही समझोगे कि शब्द प्रकाश आप तुमको लेने आया है और तुम उसी में समा जाओगे। यह बहुत ही आसान बात है जो मैंने कह दिया है। मैंने बिल्कुल साफ बात कह दी है कोई कसर नहीं छोड़ी। यह मैंने इस लिए कहा है कि आप लोग मुझसे प्यार करते हैं इसलिए मेरे सिर पर जिम्मेदारी आती है मैं आप लोगों की आँखों में मिट्टी नहीं डालना चाहता। जो मेरे जिम्मे कर्तव्य है वह मैं पूरा करना चाहता हूँ।

लोग यह बात कहते हैं कि मेरा वाक्य पूरा हो जाता है जो मैं यह कहता

हूँ वही हो जाता है। इसकी वास्तविकता यह है कि जो लोग मेरे पास आते हैं उनके कर्मों का या उनका प्रभाव मेरे दिमाग पर पड़ता है और जो होना होता है वह मेरे मुँह से स्वाभाविक निकल जाता है। यदि मेरी कही हुई बात सच्ची हो जाती है या उससे आप को लाभ पहुंच जाता है तो उसके अर्थ यह नहीं हैं कि मैं जान बूझ कर वह तुम्हारा काम कर देता हूं। तुम्हारे पोता पैदा होना था मैंने उसका नाम पहले ही रख दिया। जब अभी बच्चा पेट में ही था तो मैंने कहा बच्चे का नाम बलवन्त कुमार रखना उस समय मुझे स्वयं पता नहीं था कि मैंने क्या कह दिया क्योंकि लड़का पैदा होना था उसकी Viberation मेरे दिमाग पर पड़ी। पीछे से मैंने सोचा भी कि अगर लड़का न हुआ तो दुर्गादास का विश्वास टूट जाएगा। मैं आपको अपने जाल में नहीं फँसाना चाहता इसलिए सच्चाई ब्यान कर रहा हूँ।

बिरले जीव बचन उर माना।
उनको ले सतपुर पहुंचाया॥

सतलोक क्या है ? यह वह शब्द और प्रकाश का मण्डल है जहाँ कि मन नहीं है न वहाँ कोई रूप है न शक्ल। सन्तों को वाणी रोचक है। जो यह कहता है कि मैं सतलोक गया वहाँ फलाँ २ मिले, यह मिला, वो मिला, वह गलत कहते हैं। वहाँ तो नूर और शब्द के अलावा और कुछ नहीं है। कई लोग मुझे प्रकाश में देखते हैं मुझे पत्र आते हैं और लिखते हैं कि मेरे बालों से और मेरे सिर से रोशनी की किरणें निकल रही है। मैं कैसे मान लूँ कि वहां कोई गुरु या महात्मा होता है, मैं नहीं होता।

बस यही एक पर्दा था इस पर्दे में आकर हम गरीब लोग मारे गये। हमको सच्ची बात नहीं बताई गई, झूझे दिलासे दिये गए और हम न इधर के रहे और न उधर के। मैं अपनी ड्यूटी पूरी करता हूं अगर आप लोग पार जाना चाहते हैं तो ऐसा करो कि तुम्हारा

जो मन है यह जो बंझा का बालक है इसको अच्छे विचार दो अच्छे भाव रखो।

बहुतक जीव बँधे श्रुति स्मृति।
सन्त वचन परतीत न लाया।

बहुत से जीव ऐसे हैं जो बताई हुई सचाई को भी स्वीकार नहीं करते। मगर जो लोग पक्षपाती नहीं हैं और समझ बूझ रखते हैं वे मेरी बात को मानते हैं।

फिर फिर माँगें वेद प्रमाना।
उन उस घर को नेति सुनाया॥

वेद तो उसको नेति २ कहते हैं, वह नेति तो हैं नहीं। सतलोक में नेति कहाँ हैं वहां तो प्रकाश और शब्द का भण्डार है।

It is an ocean of Light and Sound.

जब नहीं वेद वेद का करता।
तब का भेद सन्त गुहराया॥

मगर मैं ऐसा नहीं कहता। स्वामीजी वेद नहीं पढ़े हुए थे, कबीर साहिब संस्कृत नहीं जानते थे क्षमा करना मेरी बात को, मैं बड़ा आजाद ख्याल हूँ। वेदों उपनिषदों में सम्भव है बहुत कुछ लिखा हो। क्योंकि कबीर साहिब और स्वामी जी को सस्कृत नहीं आती थी। इसलिए वेदों का ज्ञान उन्होंने केवल उन पंडितों से सुना जो उनके साथ शास्त्रार्थ करने को आते थे। पण्डित लोग वेदों के पूर्ण ज्ञानी नहीं थे वे कबीर साहिब को समाधान न करा सके। इस लिए कबीर साहिब ने कह दिया कि वेद इस बात को नहीं जानता, उन्होंने वेदों का खण्डन कर दिया। मैं चाहता हूँ कि हिन्दु फिल्लासफो वाले क्रियात्मिक बनें और फिर लोगों को वेद उपनिषद की शिक्षा दें। यहाँ प्रिंसीपल रलाराम जी होते थे मुझे उनसे मिलकर बड़ी खुशी मिलती थी वे बताते थे कि पंडित जी ने जो कुछ कहा है वह वेद में लिखा हुआ है। जिस विद्या को हम नहीं जानते हमारे पास

यह कहने का क्या अधिकार है कि वह बात वेद में नहीं है। स्वामी जी या कबीर साहिब को कोई अधिकार नहीं था। कि वे वेदों का खण्डन करें जब कि वे संस्कृति नहीं जानते थे और उन्होंने वेदों का अध्ययन नहीं किया। जब तक कोई किसी ग्रन्थ का पूर्ण रूप से अध्ययन नहीं करता उसका खण्डन करने का कोई अधिकार नहीं। यह ठीक है कि व्यक्ति को अपना अध्यात्मिक अनुभव हो मगर उसको बिना पढ़े ग्रन्थों का खण्डन करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं निडर होकर यह बात कहना चाहता हूं मैं नियम की बात करता हूँ मैंने वेद नही पढ़ा। मैं वेदों का खण्डन नहीं करता और न ही करने का उत्साह रखता हूँ। स्वामी जी ने तो कर दिया मगर मैं नहीं करता इसी खण्डन ने तो मुझे मारा। जो कुछ मैंने समझा है वह न तो स्पष्ट रूप में दातादयाल ने कहा और न ही किसी और सन्त ने कहा। संकेत अवश्य करते रहे यह रहस्य तो मुझे तुम लोगों से मिला।

उस घर का मर्म वेद नहिं जाने।
फिर क्यों कर परमान सुनाया॥

वे और क्या करते ? मैं तो बड़ा निर्भय होकर कहता हूँ। स्वामी जी संस्कृत नहीं जानते थे इसलिए उन्होंने ऐसा लिख दिया। पंडित लोग तो कर्मकाण्डी हैं इनका अपना अमल या अनुभव कुछ नहीं। गायत्री मंत्र को ही ले लो सभी गायत्री की रट लगा रहे हैं मगर गायत्री मंत्र है क्या ? यह किसी को पता नहीं। जाग्रत, सुषुप्ति, स्वप्न इन तीनों के परे जो प्रकाश रूपी सूरज है उसका ध्यान करो ताकि वह तुम्हारी बुद्धि को प्रेरित करे। तब जाकर तुमको कहीं ज्ञान होगा।

भूर्भुवः स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्।
"तत्सवितर्वरेण्यम्।"

यानी भूर्भुवः स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्। इन सातों लोकों

से परे सावित्री को देखो तब तुमको ज्ञान प्राप्त होगा। और भूर्भुवः स्वः जो है यही सन्त मत का है।

यह तो बात अगम गति न्यारी।
सन्त बिना कोई नेक न गाया॥

यह देखो! मैं तो कहता हूँ जिसने भी इस बात को भी समझ लिया है, वही सन्त है। सन्त कोई जात नहीं। आजकल तो हरएक के नाम से पहले सन्त लिखा हुआ होता है उनको जरा गौर से देखो उनका जीवन क्या है वे लोग सन्त शब्द का गलत प्रयोग कर रहे है।

ताते सन्त वचन को मानो।
यह परतीत प्रमान दृढ़ाया॥

और मैं यह कहता हूं कि जब तक तुम्हारी बुद्धि न माने बिल्कुल सन्त वचन को न माने। मैं कहता हूं जब तक किसी बात का तुम को आपे पूरा विश्वास नहीं है और तुम अन्ध विश्वासी बनकर विश्वास करते जाओगे उसका परिणाम कभी अच्छा नहीं होगा। कभी न कभी तुम्हारा विश्वास डोल जाएगा और टूट जाएगा। यह मेरी शिक्षा है। यदि किसी बात पर विश्वास करते हो तो अपने अनुभव से करो। गुरु वह है जो तुम्हारी बुद्धि को निश्चयात्मक बना दे मगर ऐसा होने में समय लगता है, महनत लगती है। सभी को एक ही समय नहीं लगता और इसके लिए पहले इन्सान को अधिकारी बनना पड़ता है अब एक नौ या दस साल का बच्चा मेरे पास आ जाए तो क्या मैं उसको यह तालीम दे सकता हूं? नहीं। प्रत्येक आदमी के लिए शिक्षा अलग २ है यदि तुमको यह विश्वास नहीं है कि महीना नौकरी करने के बाद तुमको वेतन नहीं मिलेगा तो क्या तुम नौकरी करोगे? नहीं। इन्कार कर दोगे। तो यह विश्वास दिलाना बाहर के गुरु का काम है कि जो कुछ वह तुमको कहता है उस पर तुम विश्वास करो। मगर यह ऊँची शिक्षा सबके लिए नहीं

है। पहले शुरू से अमल कराया जाता है इसलिए मैं प्रत्येक को नाम नहीं देता। दुःखी लोग आते हैं तो उनको इलाज बता देता हूँ बस मैं यही करता हूँ।

सन्त बिना कोई मर्म न जाने।
वेद कतेब कहाँ से लाया॥
वह तो तीन गुनन में बरते।
काल बचन कानून सुनाया॥

काल वचन है क्या ? बुद्धि का। बुद्धि से जो कुछ हम कहते हैं यह काल है यह लाभ भी देता है, नुकसान भी देता है। परमार्थ के विचार से जब मन से ऊपर चले जाओगे वहां मन नहीं है, काल नहीं है केवल शब्द और प्रकाश है।

॥ दोहा ॥

वेद बचन त्रैगुन विषय, तीन लोक की नीत।
चौथे पद के हाल को, वह क्या जाने मीत॥

चौथा पद इसकी चर्चा गीता में भी आई है इसका पता मुझे तुम लोगों ने दिया मैं हूँ, मैं ही साक्षी हूँ अपने तमाम मन के रूप का ज्ञान हो गया कि मैं शरीर नहीं हूँ प्रकाश नहीं शब्द नहीं वह जो वस्तु है वह चौथा पद है आप लोगों को मैंने यही कहना है कि मानस जन्म सुधारो। यह तो कर्मों के अनुसार है कोई कुछ बन गया, कोई कुछ बन गया यह तो कर्मों का चक्कर है। हमेशा विचार उस तरफ रखो प्रकाश और शब्द की तरफ। बाकी दुनिया का सारा काम करते जाओ। मेरी संगत में आए हो मैं चाहता हूँ तुम्हारी दुनिया भी बने परलोक भी बने बड़ा भाग्यवान है वह जिस को मालिक पर विश्वास आए। जीवन का ध्येय केवल दुनिया ही नहीं है काम काज तो केवल पेट भरने के लिए है। जीवन का ध्येय तो इस बंधन से छूटना है।

सबको राधास्वामी

अधिकार

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥

अधिकार और संस्कार के समझे बिना जो कोई काम करता है उसे सफलता प्राप्त नहीं होती किन्तु असफलता का भय पग पग पर रहता है। सन्त कहते हैं —'जगत की रचना सुरत और शब्द का खेल है!' सुरत ध्यान (ख्याल) को कहते हैं। जिसका जैसा विचार या ध्यान है वह वैसा ही काम करने के लिये रचना में बनाया गया है। उसकी रुचि और उसका अधिकार संस्कार भी वैसा ही होता है यह संसार द्वन्द स्थान है। द्वन्दपना ही सृष्टि की जान है। यहाँ किसी दो वस्तुओं में भी समता और सदृश्यता नहीं दिखलाई देती। जो है वह है। एक बाप के दो बेटे, एक पौधे के दो पत्ते, एक मनुष्य के दो चित्र, एक छापे की दो पुस्तकें एक तरह की नहीं मिलेंगी। उनमें भिन्नता अवश्य प्रतीत होगी क्योंकि सृष्टि का नियम ही ऐसा है। प्रत्येक जीवन का उद्देश्य भिन्न भिन्न है कोई कुछ है कोई कुछ है। सूर्य चमकता है, बादल गरजते हैं पानी बहता है, हवा चलती है इनमें से हरएक के रूप रंग चाल व्यौहार अलग अलग हैं। यदि यह अपना काम करते हैं तो अच्छे लगते हैं और यदि दूसरे की रीस (नकल) करते हैं तो भद्दे बन जाते हैं।

ठीक इसी प्रकार मनुष्य जीवन की दशा है। सबको कोई न कोई काम दिया गया है। यदि अपने स्वभाव और मानसिक फुरना की निरख परख करते हुये लोग काम करें तो सम्भव नहीं कि उन्हें सफलता देवी का दर्शन प्राप्त न हो परन्तु शोक की बात तो यह है कि द्वेष, ईर्षा, लोभ और होड़, रीस में पड़कर मनुष्य अपना मुख्य काम तो देखता नहीं और यों ही दूसरों का अनुकरण करने लग जाता है। तेली का काम तंबोली से नहीं होता।

जिसका काम उसी को साजे।
और करे तो डंडा बाजे॥

लोगों के जीवन नष्ट हो रहे हैं। बिना समझे बूझे लोग भूल भ्रम में फँसकर बेतुकेपन की राह चले जा रहे हैं।

हमसे बहुत से लोग मिलने आते हैं जिनकी अवस्था अस्सी-अस्सी साल की है। भक्ति भाव की राह में आये हुये पचासों वर्ष हो गये परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं—"वही ढाक के तीन पात।" कारण यह है कि पहले अपने अधिकार को नहीं देखा और न यह पता लगा कि वह संसार में अपने स्वभाव के अनुसार किस काम के लिये निर्दिष्ट होकर आये हैं और उनको क्या काम किस प्रकार करना चाहिये, दूसरे किसी जानकार और अनुभवी गुरू से सम्मति तक नहीं ली जो इनके अन्तरी भाव को समझकर उनको सीधी राह पर लगाता। अब पछताते हैं परन्तु पछताने से होता क्या है? अच्छा चलने दो। दूसरे जन्म में तो सुधार होना ही है। मन की कुरेदने वाली शक्ति दवा दी गई परन्तु वह भीतर ही भीतर अपना काम करती चलेगी और अवसर पाकर अपना काम बनायेगी। बीज खेत में पड़ा हुआ है। वह नष्ट नहीं जायेगा। कभी न कभी उसमें अँखुआ फूटेगा और फल फूल आवेंगे। हाँ! यह अवसर तो हाथ से जाता हो रहा। अब इसका हाथ आना महा कठिन है।

संसार में बहुत से काम देखा देखी किये जाते हैं। समझ नहीं, बूझ नहीं, जो औरों को करते देखा उसी के पीछे चल पड़े। अपने अधिकार और संस्कार का ज्ञान प्राप्त नहीं किया इसका परिणाम तो दुःख होना ही है। एक ही काम संसार में दो मनुष्यों के लिये ठीक नहीं होता। जिन लोगों को जीवन में सफलता प्राप्त हुई है उनमें से दो मनुष्यों के कारबार, स्वभाव और व्यौहार एक जैसे कभी न मिलेंगे। किसी के लिये कोई ढंग उचित और लाभदायक है, किसी के लिये कोई। न यहाँ एक से दो अवतार मिलते हैं न एक

जैसे दो देवता दिखलाई देते हैं। जो है वह है। प्रत्येक मनुष्य अपना अधिकार साथ लाया है और भलाई भी कुछ इसी बात में है कि अपने संस्कार और अधिकार के अनुसार उन्नति का यत्न किया जाये। इसीलिये कहा गया है और कहा जाता है कि बिना गुरु के भक्ति मार्ग में कभी न चलो नहीं तो धोखा खाओगे। वाणी है :—

"बिन गुरु घट में राह न चलना।
डर ओर विघ्न अनेकन मिलना॥
गुरु रक्षा जाके संग नाहीं।
ताको काल कर्म भरमाहीं॥"

दो बातें तो यह हुईं। तीसरी बात यह है कि जब अपना अधिकार और संस्कार समझ में आ गया और राह में चल पड़े तो इसमें सच्चा होकर लगना चाहिये और इस एकाग्रता और सच्चाई से काम करना चाहिये कि सुरत की धार दूसरी ओर न जाने पावे नहीं तो फिर बने बनाये खेल के बिगड़ जाने का भय रहता है। सारी बात एकाग्रता पर निर्भर है। जैसा काँछ काँछो वैसा नाच नाचो। जो सच्चा होकर लगेगा वह शीघ्र ही अनुभव सम्पन्न होने लगेगा।

साईं आगे साँच हो, साईं साँच सोहाय।
भावे घर में बास कर, भावे बन में जाय॥

—०—

दृष्टान्त (१)—किसी स्त्री को किसी पुरुष के साथ प्रेम था। प्रेम सच्चा था। वही उसके जीवन का आधार और आदर्श बना हुआ था। उसके अतिरिक्त वह किसी और को नहीं चाहती थी क्योंकि प्रेम का गुण है कि जब वह आकर मन में बस जाता है फिर देकिसी भाव को रहने नहीं देता। सबको निकालकग वाहिर कर ता है।

जहाँ बाज* बासा करै, पंछी रहै न कोय।
जा घट प्रेम प्रगट भया, तहाँ न बिकलप होय॥

स्त्री उसी के प्रेम में मस्त रहती थी। खाना, पीना, सोना सब कुछ छूट गया था। महीनों बीत गये उसे अपने प्रीतम का दर्शन नहीं मिला। वह घबराती थी। अन्त में पता लग गया कि वह किसी स्थान पर आकर ठहरा है। इसे चैन कहाँ! वह चल खड़ी हुई। दीवानी, बावली! यह उसी के ध्यान में मग्न होकर उससे मिलने जा रही थी। राह में अकबर का खेमा खड़ा था। वह अपने खेमे से बाहर जानुमाज● बिछाकर नुमाज पढ़ रहा था। उसे बादशाह का कहाँ ध्यान था! वह उसकी जानुमाज को अपने पाँव से रौंदती हुई चली गई। अकबर को क्रोध तो आया परन्तु नुमाज पढ़ते समय क्रोध को रोकना ही पड़ा। वह गई और अपने प्रीतम से मिलकर हँसती हुई उसके साथ लौट आई। बादशाह नुमाज पढ़ चुका था। उसको देखकर बोला 'क्यों री पापिन! तुझको यह ध्यान नहीं था कि यह जानुमाज है? तू इसको अपवित्र पावों से रौंदती हुई चली गई!'

स्त्री जो प्रेम में मस्त थी निर्भयता के साथ मुसकराई क्योंकि प्रेम मनुष्य को अभय और अचिन्त बना देता है।

उसने कहा :—

'नर राची सूझी नहीं, तुम कस लख्यो सुजान?
पढ़ कुरान बौरे भयो, नहिं राचा रहिमान।'

अर्थ—"महाराज! मैं तो मनुष्य के प्रेम में बावली थी, न आप को देखा न आपके जानुमाज को देखा परन्तु आपने मुझको कैसे देख लिया? जान पढ़ता है कुरान पढ़कर आप बावले हो गये और मालिक के सच्चे प्रेम ने आपके हृदय में जगह नहीं की।"

बादशाह इस उत्तर से बहुत ही लज्जित हुआ।

---

* बाज एक शिकारी चिड़िया है। ●कपड़ा जिसे बिछाकर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं।

ऐसे ही प्रेम के मार्ग में भाँड़ नहीं बनना चाहिये। सच्चे बनो और सच्चे होकर लगो तब तो इसका स्वाद मिलेगा और यदि यों ही रोस करते हो तो फिर भाँड़ के भाड़ बने रहोगे, न प्रेम का आनन्द मिलेगा और न असलियत की समझ आयेगी।

=×=

दृष्टान्त (२)—लखनऊ में एक प्रसिद्ध भाँड़ (नकल करने वाला) रहता था। जो नकल करता था सच्ची कर दिखाता था। उन दिनों लखनऊ के नवाब वाज़िदअली शाह थे उनके समय में नाचने वाले, गाने वाले और भाँड़ों की बन आई थी। बादशाह ने भांड़ को योगी की नकल करने की आज्ञा दी। वह पद्मासन पर जमकर बैठ गया और साँस चढ़ा ली। नाड़ी चलना बन्द हो गई। सांस एक दम रुक कर समाधि लग गई। देखने वाले घबरा गये। बहुतों को यह निश्चय हो गया कि यह मर गया है परन्तु आसन पर जम कर बैठे रहने से बादशाह ने कहा, 'नहीं, यह जीता है।" घंटों बीत गये। वह अकड़ा बैठा रहा। बहुत देर पीछे समाधि टूटी। वह कहने लगा, "अन्नदाता ! आज तो पाँच सौ रुपये इनाम मिले।"

देखा ! यह भाँड़ों की मजदूरी है। जो मनुष्य जिस विचार को लेकर काम करता है उसका आदर्श वही विचार हो जाता है और अन्त में वही फुरता भी है। इसलिये इस बात की भी आवश्यकता है कि अधिकारी दिखावे में न फँस जाये वह इस बात का पूर्ण ध्यान रखे कि हमारे साधन अभ्यास का मुख्य ध्येय क्या है। किसी ने भाँड़ की तरह योग का भी साधन कर लिया तो क्या हुआ ! इसकी दृष्टि सिद्धि ही शक्ति तक रही। सच्चाई का साक्षात्कार नहीं हुआ जो योग का मुख्य अभिप्राय था।

=०=

प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकतायें अलग अलग हैं। सृष्टि का यह नियम है कि जिसको जिस वस्तु की सच्ची चाह होती है वह मिल

रहती है। यदि दूसरा मनुष्य इसकी होड़ रीस करे तो अन्त में उसे लज्जित होना पड़ेगा। रोगी के लिये कभी कभी थोड़ी सी संखिया भी अमृत का काम दे जाती है परन्तु आरोग्य मनुष्य के लिये यह हलाहल विष है। पूरब में एक कहावत कही जाती है—"किसी को बैंगन पथ्य किसी को बैंगन जहर।" धार्मिक विषय में भी ऐसा ही समझो। एक मनुष्य है जिसने अपने जीवन के आदर्श को अधिकाँश में पूर्ण कर लिया है, थोड़ी सी कसर रह गई है। वह साधारण अभ्यास कर रहा है। यदि वह मनुष्य जो अभी अभी राह में आया है उसकी रीस करे और उसी का रंग ढंग ग्रहण करना चाहे तो उसे लाभ के बदले हानि पहुंचेगी। इसी लिये कहा गया है— गुरू की आज्ञानुसार काम करो, उनकी चाल न चलो।" पूर्ण और अपूर्ण मनुष्यों में आकाश और पाताल का भेद होता है। वह आत्मज्ञान की चोटी पर है, तुम अभी अभी राह में आये हो। तुम्हारा अधिकार और तरह का है।

=०=

दृष्टान्त (३)—लाहौर में एक महात्मा हुए हैं जिनका नाम लाल माधव या माधव लाल था। यह छोटे और सुन्दर बच्चों को गोद में लेकर प्यार किया करते थे। इनके इस स्वभाव से लड़कों के माता पिता बहुत ही प्रसन्न रहा करते थे और इनकी आवभगत हुआ करती थी। किसी मुसलमान फकीर ने जो हृदय का मलीन था यह दशा देखी और इनके साथ हो गया। जो काम यह करते थे वह भी करने लगा। पंजाब में फकीरों का आदर सत्कार बहुत होता है। इसकी भी मान प्रतिष्ठा बढ़ गई और यह इसी का भूखा था। बाबा लाल माधव ने इसकी यह दशा देखी और हँस पड़े। एक दिन आप चले जाते थे, राह में एक साँप पड़ा हुआ था। यह उसे भी उठाकर भी प्यार करने लगे। फिर सांप को उस मुसलमान फकीर के पास रख दिया। वह डर से भाग गया। फिर उसने अनुकरण करना

छोड़ दिया।

—×=

दृष्टान्त (४)—राधास्वामी धाम से छः मील पर महाराज साहिब बनारस के राज की सदर कचहरी है। इस जगह का नाम 'ज्ञानपुर' है। महाराजा साहिब की सब कचहरियाँ भी यहीं हैं। यहां दो मुख्तार रहते थे। एक सीधे सादे और हँसमुख थे। दूसरे भी सज्जन थे परन्तु उनमें रीस करने का स्वभाव था और जो कुछ पहिले मुख्तार को करते देखते थे आप भी वैसा ही करते थे। एक बार पहले मुख्तार ने भैंस मोल ली और अपने द्वार पर बँधवा दिया दूसरे मुख्तार साहिब को भी पता लगा। उन्होंने भी एक भैंस मँगवाई। किसी पहिले साहिब से यह बात जाकर कह दी। उन्होंने उसे बेचकर गाय मोल ली। इन्होंने जो सुना झट भैंस के बदले गाय लेकर बांध दिया। पहले मुख्तार ने अब गाय की जगह बकरी मँगाई दूसरे साहिब ने भी ऐसा ही किया। अब तो स्पष्ट रीति से पता लग गया कि दूसरे को पहले की होड़ है। उन्हें जो दिल्लगी सूझी इन्होंने एक धोबी के यहां से गदहा मँगवाकर अपने द्वार पर बाँधा और उन्हें कहला भेजा, 'साहिब! आज मेरे यहाँ गदहा बँधा है, तुम भी बाँधों तब तो बात है।" पूरब में गदहा बाँधना तो दूर रहा इसका छूना भी पाप समझा जाता है। यह सिटपिटाये और मन में बहुत ही लज्जित हुये। ऐसी रीस बुरी होती है।

भजन बन्दगी में भा देखा देखी काम करने या होड़ करने से हानि पहुंचती है। लोग समझते नहीं और बिना समझे बूझे काम करते हैं। परम सन्त कबीर साहिब की बाणी है :—

देखा देखी भक्ति का कबहुं न लागै रंग।
बिपत पड़े पर छाँड़ई, ज्यों केचुली भुजंग॥

दृष्टान्त (५)—एक कंगाल ब्राह्मण दुखी रहता था। दिन भर मांगे और दोवा भर पावे। यही उसकी दशा थी। ब्राह्मणी ने कहा,

"दूसरी जगह जाओ। जगह बदलने से सम्भव है भाग्य भी पलट जाये।" इस दुखिया ने कहीं पड़ौस से नाज लाकर सत्तू बनाया और अपने पति को देकर विदा किया। उसने थोड़ी दूर आकर पीतल के लौटे में सत्तू डालकर वृक्ष की डाली से बांध दिया और आप उसके नीचे बैठकर अपने भाग्य को कोसने लगा साथ ही शिवजी महाराज से उसने प्रार्थना भी की कि यह दशा कब तक रहेगी ? रोते झींकते कुछ देर हो गई और वह गहरी नींद में सो गया। शिव भगवान पार्वती जी के साथ उधर से निकले। सत्तू की सुगन्धि पाकर वृक्ष की ओर चले आये जहां ब्राह्मण सो रहा था। पार्वती जी ने कहा, "सृष्टि नाथ ! यह ब्राह्मण महा कंगाल है। ऐसी दया कीजिये कि इसका दुख दरिद्र दूर हो जाये।" शिवजी ने उसका लौटा ले लिया और उसकी जगह सोने का लौटा लटका दिया। इस लौटे में यह गुण था कि जो कुछ उससे मांगा जाय वह तत्काल ही दे दे। शिवजी तो कैलाश पर्वत पर चले गये। ब्राह्मण की नींद खुली, सोचा—'यदि इस समय हलुआ पूरी मिलते तो पेट भर कर खाता।' लोटा उतरा देखता क्या है कि पूरी हलुआ लोटे में रखा हुआ है। फिर तो संतुष्ट होकर भोजन किया। पानी की इच्छा होते ही पानी भी उसमें मिल गया। अब इसे पूर्ण विश्वास हो गया कि किसी देवता ने दया करके उसे यह लोटा दिया है। वह प्रसन्न होकर घर लौट आया। इसके दिन फिरे। अब सुख आनन्द से रहने लगा। किसी धनवान पड़ौसी ने यह बात सुनी। वह भी स्त्री से सत्तू लेकर चला। कुछ दूर जाकर लोटे में सत्तू भर वृक्ष से लटका दिया और आप तान कर सो रहा। संयोग वश उस समय भी शिवजी उधर से आ निकले। पार्वती जी बोली, 'देखो ! यह धनवान मनुष्य भी लालच वश सोने का लोटा लेने आया है।' शिवजी हँसे 'अच्छी बात है। इसे इसका फल मिल जायेगा।' इसने उठकर जो लोटे को उतारा तो वह मिट्टी का हो गया था और उसमें बिच्छू और कनखजुरे भरे थे।

जान बचाकर भागा और फिर कभी ऐसा साहस नहीं किया।

=०=

मनुष्य को जिस वस्तु की आवश्यकता होती है सृष्टि में वह उसे अवश्य मिल रहती है। हाँ उसके लिये सच्ची चाह और तड़प होनी चाहिए।

दृष्टान्त (६)—हमको याद है कि जब हम कालिज में पढ़ते थे एक बार कई लड़कों के साथ बैठ कर हम भी उनकी तरह हँसी दिल्लगी करने लगे। मास्टर मुरली मनोहर साहिब का मालिक भला करे। वह भी हम लोगों के साथ बैठे थे। आजकल वह महाराजा साहिब रीवां के दरबार में हैं। हमसे कहने लगे, "देखो हंसो दिल्लगी तुम्हें शोभा नहीं देती। ईश्वर ने तुम्हें स्वाभाविक सुशील और गम्भीर बनाया है।' हम उस समय से सँभल गये और फिर हँसी दिल्लगी से अलग थलग रहने लगे क्योंकि हम भी समझ रहे थे कि यह हमारे अपने स्वभाव के विरुद्ध है। स्वभाव विरुद्ध काम करना मूर्खता है। परन्तु संसार में कितने मनुष्य हैं जो इस नियम का पालन करते है! कहीं भी इसका ध्यान नहीं रखा जाता। लड़का स्वाभाविक साइंस विद्या का प्रेमी है। माँ बाप चाहते हैं कि वह बकील बने। देखो! यह कितना बड़ी भूल है। यही दशा धार्मिक विषय में भी है। जिसके कर्म का अधिकार है उसे उपासना में लगाया जाता है। जिसने अभी तक उपासना का अर्थ भी नहीं समझा उसे ज्ञान की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। ऐसा कर्म, धर्म, पढ़ना लिखना सब व्यर्थ है। यदि नियमानुसार शिक्षा दी जाये तो उसका कोई अच्छा फल भी निकले। यही कारण है कि सन्तों के यहाँ सिलसिले के साथ शिक्षा दी जाती है परन्तु उसकी प्रणाली गुप्त रीति से चली आती है जिसे सर्व साधारण नहीं जानते। यह बातें पुस्तकों में नहीं मिलतीं। यह केवल गुरु द्वारा प्राप्त होती हैं।

—×—

१—वस्तु कहीं ढूँढ़े कहीं केहि विधि आवै हाथ।
कह कबीर जब पाइये भेदी लीजै साथ॥
२—भेदी लीया साथ कर दीन्हीं वस्तु लखाय।
कोट जन्म का पन्थ था पल में पहुँचा जाय॥
३—घट का परदा खोलकर सनमुख ले दीदार।
बाल सनेही साइयाँ आदि अन्त का यार॥
४—गुरु कुम्हार शिष कुम्भ है गढ़ गढ़ काढ़े खोट।
भीतर हाथ सहार दे ऊपर मारे चोट॥

=×=

शब्द

तू जान अजान से न्यारा है, तू जान नहीं अनजान नहीं।
किसने तुझे जाना पहिचाना, तू ज्ञान नहीं अनुमान नहीं॥१॥
इस बानी ने नहीं गम पाई, नहीं बुद्धि में आई चतुराई।
मन अमन बना घबराया हुआ, तू मान नहीं अभिमान नहीं॥२॥
अनजान को क्या कोई जानेगा, अदृष्ट को क्या पहचानेगा।
जोगी ज्ञानी थक कर बैठे, उन्हें जान नहीं पहचान नहीं॥३॥
सब कहने को तो कहते हैं, कहकर संशय में रहते हैं।
इन कहने सुनने वालों में, अनुमान नहीं परमान नहीं॥४॥
कहाँ जाकर कोई तुझे पावे, कैसे तू किसी के हाथ आवे।
तेरा निश्चित कोई इस जग में है, ठिकान नहीं अस्थान नहीं॥५॥
नहीं स्वर्ग न नर्क का वासी तू, नहीं दुखरासी नहीं सुखरासी।
निगम अगम को मथकर देखा, तू गान नहीं स्वर तान नहीं॥६॥
राधास्वामी सतगुरु आये, सुरत शब्द भेद कहकर गाये।
चित हुआ समाहित तब मेरा, इस समता का उत्थान नहीं॥७॥

=×=

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सत्गुरु के चरण कमल में

वन्दना

घट का घर सूना पड़ा है, उसमें आप आ जाइये।
दास हूं सेवक हूं सच्चा, अब तो आप अपनाइये ॥१॥
काम का मद मोह का, माया का कूड़ा हट गया।
शुद्ध निर्मल और सुथरी, कोठरी में आइये ॥२॥
घट का घर मेरा बने, मन्दिर सोहाना अद्भुती।
मूरती आकर बिराजे, अपनी छवि दिखलाइये ॥३॥
मैं तुम्हारा तुम हो मेरे, यह समझ में आ गया।
भर्म और अज्ञान माया, मोह का मिटवाइये ॥४॥
आरती साजूँ जलाऊँ, जोत भक्ती प्रेम की।
राधास्वामी ! नाद घन्टा, शंख का सुनवाइये ॥५॥
राधास्वामी दयाल की दया ! राधास्वामी सहाय !!

=×=

ग्राहकों से निवेदन

जिन ग्राहक भाइयों का पिछले व इस वर्ष का चन्दा नहीं आया है वे चन्दा भेजने की कृपा करें। ताकि उनको पत्रिका सुचारू रूप से मिलती रहे और हमें भी प्रकाशन में धनाभाव के कारण आई कठिनाई का सामना न करना पड़े।

धन्यवाद

——प्रकाशक

×—×

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम	:	श्री प्रभूदयाल मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं०

श्री

सम्पादक— प्रद्युम्न मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—

श्रीमती सुधा मीतल,

शिव भवन, लेखराज नगर

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh.

1206.60	Free Eye Ho...	
12495.77	Government grant for H...	
	Hospital receipts	
10000·00		
222304.80	TOTAL	282405·08

Sd. VICE PRESIDENT

Sd. TRUSTEES

As per our report at the foot of the balance sheet.

for (D. SHARMA & CO.)

Sd. D. D. SHARMA

Partner

CHARTERED ACCOUNTANT AUDITOR

9,9	
518	
4,255·45	
1,046·35	
281·00	El
1,111·36	Medical equ
625.45	Tubewell
235 00	Tape Record
17,637.31	Balance (excess o Income over expdt
22,304·80	TOTAL

By Donation received	47·10	
Subscription received	290·00	
Rent Received	4550·00	
Interest received		
...anavta Dispensary receipts		
...spital Receipts		
...ree eye		
	NIL	
	23977·66	
	1212·70	
	18368·20	
	4000·00	
	288·00	
	234558·52	
	2405·08	
	..4	
	1347.74	
	282405·08	

Sd. DINESH KUMAR
Internal Auditor
14—4—1979
JLLUNDUR CITY
...arma & Chartered Accountants.

. N. BHARDWAJ
President